जीवन जीने की कला का आंदोलन है ब्रह्माकुमारीज़

▶ ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं से भारत में नेपाल के राजदूत हुए अभिभूत

▶ शिक्षाविदों, धर्मगुरुओं ने भी बहाई चिंतनधारा

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए भारत में नेपाल के राजदूत दीपकुमार उपाध्याय। मंचासीन हैं ब्र.कु. डॉ. सविता, नवाब ज़फर मीर अब्दुल्लाह, राजीव निशाना, वदूद साजिद, ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. रानी, नेपाल के सांसद भीमसेन दास प्रधान तथा अन्य विशिष्ट अतिथि।

महासम्मेलन के दौरान श्रीरंगम भरतनाट्यालय त्रिची की कलाकार बालिका सुंदर पिकॉक डांस की प्रस्तुति देते हुए।

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ पूरे विश्व के लोगों को शांति और शक्ति के साथ जीवन जीने की कला सिखा रही है। यह अलौकिक और अद्भुत कार्य है। संस्था की विपरीत परिस्थितियों में स्थितप्रज्ञ होने की सीख स्वस्थ और सफल जीवन का आधार है। इस सामाजिक आंदोलन को उत्तरोत्तर समर्थन मिल रहा है, शीघ्र ही यह विश्व व्यापी हो जाएगा। यह उद्गार भारत में नेपाल के राजदूत दीपकुमार उपाध्याय ने ब्रह्माकुमारीज की 80वीं वर्षगांठ पर चल रहे अंतर्राष्ट्रीय महा-सम्मेलन में व्यक्त किए। संस्थान के प्रति बार-बार कृतज्ञता जताते हुए उन्होंने कहा कि शांति की स्थापना पीड़ित मानवता की सबसे बड़ी सेवा है। ब्रह्माकुमारीज़ में न कोई छोटा है, न बड़ा, यहाँ कोई भेदभाव नहीं है।

धर्मनिरपेक्षता के आधार पर सेवा

नेपाल के सांसद भीमसेन दास प्रधान ने कहा कि यह एकमात्र ऐसा संगठन है जहां धर्मनिरपेक्षता के आधार पर चरित्र का निर्माण किया जाता है। यहां से जुड़ने के बाद जीवन में सुख-शांति आ जाती है। यह विश्व शांति और आत्म शांति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। संस्था बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है।

पत्रकारों को भी मिले राजयोग का प्रशिक्षण : राजीव निशाना

समाचारवार्ता के ग्रुप एडिटर राजीव निशाना ने कहा कि आज शांति की सबसे ज़्यादा ज़रूरत पत्रकारिता जगत को है। पत्रकारों और पत्रकारिता का कोर्स कर रहे विद्यार्थियों को राजयोग का प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे खुद जीवन जीने की कला सीख सकें, नकारात्मक विचारों से परहेज करें और समाज को भी सकारात्मक खबरों से प्रशिक्षित करें।

अस्सलाम वालेकुम् और ओम शांति एक ही शब्द

वी.एन.आई. के मुख्य संपादक वदूद साजिद ने कहा कि 'अस्सलाम वालेकुम् और ओम् शांति एक ही शब्द है'। शांति.. शांति और शांति...। साजिद ने कहा कि हज़रत मोहम्मद साहब कहते थे, पूरी कायनात हमारी है... तो ब्रह्माकुमारीज़ अपने शांति व राजयोग के मंत्र से इसी को साकार कर रही है। यहां सभी सुप्रीम गॉड के बच्चे हैं। पूरे विश्व में सेवाएं दे रहे हैं। एक और दृष्टांत में कहा कि मोहम्मद साहब की बेटी फातिमा जब आती थीं तो वे उठकर अपना बिछौना उन्हें दे देते थे। इसी तरह यहां भी नारी सशक्तिकरण का संदेश दिया जा रहा है। जो काम करोड़ों लोगों को करना था, वो संस्था ने अपने दम पर कर दिखाया है। भारत जैसा सुपर स्पीरिच्युअल पावर कहीं नहीं, जहां ब्रह्माकुमारीज़ जैसा सामाजिक आंदोलन काम कर रहा है।

यहां परमात्मा का होता है दिव्य अवतरण: ब्र.कु. सूर्य

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक राजयोगी ब्र.कु. सूर्य ने कहा कि इसी स्टेज पर परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। इससे चारो ओर शुभ व सकारात्मक बायब्रेशन्स की अनुभूति सभी को होती है। जो देवकुल की आत्माएं हैं और भाग्यवान आत्माएं हैं वही यहां पहुँचती हैं। राजनीति और अध्यात्म के जोड़ से ही भारत फिर से विश्व गुरू बनेगा। अपने चित्त को आध्यात्मिकता से भरते चलें तो जीवन आनंदमय बन जाएगा। यहाँ आपको अच्छा लगा ये बहुत अच्छी बात है, लेकिन अगर आप यहाँ से परमात्म शक्तियों का अनुभव साथ लेकर जाएं और उसके साथ जीवन जीयें तो ये सम्मेलन की सार्थकता होगी।

ब्रह्माकुमारीज़ माउण्ट आबू में जन्नत को देखा: नवाब ज़फर मीर अब्दुल्लाह

इमामिया एजुकेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष नवाब ज़फर मीर अब्दुल्लाह ने कहा कि हम लोग जन्नत, हेवन के बारे में कल्पना करते हैं लेकिन मैंने यहां ब्रह्माकुमारीज़ माउण्ट आबू में जन्नत को देखा है। यहां प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर शांति, प्रेम, सहयोग की भावना और रौनक देखने को मिली। यहां से दुनिया में इंसानियत का पैगाम दिया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ के उसूल और इस्लाम के उसूलों में काफी समानता है। इस्लाम के पाँच मुख्य सिद्धांत और ब्रह्माकुमारीज़ के कार्य में समानता दिखती है।

साधना छोड़ने से जीवन में बढ़ी अशांति: ब्र.कु. रानी

बिहार की ज़ोनल इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. रानी ने कहा कि मैं 60 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ में समर्पित हूँ, मुझे कभी भी जीवन में कठिनाई नहीं आई। बाबा शांति से जीवन चला रहा है। मनुष्य ने आज भौतिक साधनों का विकास किया है, लेकिन साधना छोड़ दी है। इससे अशांति फैल गई है। जीवन में सुख-शांति व खुशहाली राजयोग से ही संभव है।

स्वचिंतन ही परिवर्तन की कला: ब्र.कु. शुक्ला दीदी

सेक्योरिटी सर्विस विंग की नेशनल को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक चेतना से ही श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण संभव है। ज्ञान प्रकाश, योग का विस्तार और कर्म में निखार हो तो जीवन सहज बन जाएगा। स्वचिंतन, परमात्म चिंतन व सद्गुण ही श्रेष्ठ जीवन का आधार है। ज्ञान, इच्छाशक्ति और परिवर्तन की कला से ही श्रेष्ठ जीवन बनेगा।

जीवन में देने का भाव भी रखें: ब्र.कु. डॉ. सविता

वुमेन विंग की हेडक्वार्टर को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु. डॉ. सविता ने कहा कि यदि आप सदा जीवन में लेते रहेंगे तो यह खारा हो जाएगा। इसलिए देने का भाव भी रखें। राजयोग से जीवन का परिवर्तन हो जाता है। राजयोग के माध्यम से ईर्ष्या, क्रोध, नफरत, द्वेष, नकारात्मकता आदि से छुटकारा पाकर जीवन में परिवर्तन लाया जा सकता है।

महासम्मेलन के दौरान अतिथियों के स्वागत में सुंदर नृत्य प्रस्तुति देते हुए कलाकार बालिकाएँ।

स्वागत गीत से बांधा समाँ...

कार्यक्रम के शुभारंभ पर श्रीलंका से आई बालिका वी. खुशी ने श्रीरामचंद्र कृपालु भजमन पर आकर्षक नृत्य पेश किया, जिसे देख हॉल तालियों की गडग़ड़ाहट से गूंज उठा। चेन्नई के रामू महाराजपुरम ने स्वागत गीत 'जिन्हें ढूंढ़े थे हम दर-दर, वो भगवान आ पधारे हैं...' की प्रस्तुति दी। वहीं श्रीरंगम भरत नाट्यालय त्रिची की बालिकाओं ने स्वागत मयूर नृत्य की प्रस्तुति दी। अतिथियों का सम्मान संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने स्मृति चिन्ह व पुष्पगुच्छ देकर एवं माला पहनाकर किया। संचालन जयपुर की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. चंद्रकला ने किया। गॉडलीवुड स्टूडियो के डायरेक्टर हरिलाल भाई ने सभी का आभार व्यक्त किया।

बाबा के जीवन पर सुंदर नाटक का मंचन

महोत्सव के तहत डायमंड हॉल में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से आए कलाकारों ने एक से बढ़कर एक आकर्षक प्रस्तुति दी। मुंबई से आए कलाकारों ने संस्थान के संस्थापक दादा लेखराज कृपलानी से प्रजापिता ब्रह्माबाबा बनने तक की जीवनी पर नाटक का मंचन किया। इसके माध्यम से प्रतिभागियों ने जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए सभी को प्रेरित किया। संस्थान की स्थापना के आदि समय से लेकर अब तक की विभिन्न गतिविधियों को नाटक के ज़रिए प्रदर्शित किया गया। इसमें 70 से अधिक कलाकारों ने संस्था के शुरू से लेकर अब तक की 80 वर्ष की यात्रा और इस दौरान आईं विभिन्न परिस्थितियों, उपलब्धियों को प्रदर्शित किया।